मेरे यादो अंकल

कई बरस पहले,आई आई टी कानपुर की बात है। हमारे मोहल्ले की रामलीला चल रही थी। राम जी वनवास जा चुके थे। दशरथ जी बिस्तर पर पडे अपना संवाद बोल रहे थे। धपाक की जोरदार आवाज हुई। उपर से एक हटटा कटटा जवान लडका, शैया पर लेटे दशरथ जी की छाती पर धम्म से आ गिरा था। दशरथ जी धायल हो गये। अफरा तफरी मच गई। फौरन एम्बुलेंस बुलाई गई । दशरथ जी को लाद–फॉद कर अस्पताल ले जाया गया। बेचारे की जान जाते जाते बची। असल में आज की लीला में स्पेशल इफेक्ट लाने के लिए यादो अंकल ने कुछ नवाचार किया था। यादों अंकल हमारे मोहल्ले में ही रहते थे और हर साल रामलीला कमेटी में उन्हें साज सज्जा मंत्री का पद दिया जाता था। इस पद को वे बहुत ही जिम्मेदारी से निभाते थे। लीला की प्रस्तुति से लेकर दशहरा मेले में लटटू बल्ब टॉगे जाने तक की व्यवस्थाओं में उनके मार्गदर्शन में ही काम होता था।

आज के दृश्य में वो दशरथ के प्राण पखेरू उडते हुए दिखाना चाहते थे। मंच के चारों कोनो और उपर की तरफ लोहे के मोटे पाइप लगे थे। एक टेंट वाले लडके को सीढी के सहारे उपर चढाकर उन्होने पहले ही बिठा दिया था। उपर छत के तंबू में छिपा यह लडका दर्शकों नही दिखता था। पतले नाइलोन की रस्सी के एक सिरे पर बैटरी से जलने वाला लाल बल्ब टॉग दिया गया था। रस्सी का दूसरा सिरा उपर पाइप पर बैठे लडके के हाथ में था। तय था, कि दशरथ जी को मरने के साथ ही बल्ब का बटन दबाना है और उपर बैठा लडका धीरे धीरे नाइलोन के धागे को उपर खींच लेगा। इस तरह मैदान में बैठे दर्शकों को दशरथ जी की आत्मा लाल दीपक के रूप में उपर की ओर जाती हुई दिखाई पडेगी। लेकिन.....सब प्लान फेल हो गया। उपर बैठा लडका अपना संतुलन नही बनाए रखा सका और इतनी उपर से आकर धपाक से दशरथ जी की छाती पर आ गिया। बच गए दशरथ जी के प्राण पखेरू, नही तो सच मुच ही उपर चले जाते.....बगैर लाल बत्ती जलाये ही। कमेटी के लोगों ने यादो अंकल को दोबारा ऐसे खतरनाक आइडिया न लगाने की सलाह दी।

यूँ तो, यादो अंकल का पूरा नाम शिवनाथ यादव था। जिसे वे एस.एन. यादव लिखा करते थे, लेकिन मोहल्ले के हम सब बच्चे उन्हें यादो अंकल, यादो अंकल ही कहते आ रहे थें। अब पता नही कि ये हम सबका उच्चारण दोष था या भाषा पर क्षेत्रीयता का प्रभाव, पर बच्चों के साथ बडे भी उन्हें यादो जी ही कहते थें। यादो अंकल की सबसे पुरानी छवि जो मेरे ज़हन में अब भी बसी है, वह तब की है जब मेरी उम्र सात आठ साल की रही होगी। गहरा सॉवला रंग , खिलाडियों वाली टी–शर्ट में तगडा कसरती शरीर, रोबदार मूछें। एक बडे से गत्ते के डिब्बे में कई फुटबाल, गेंद, बल्ला और तमाम खेल का सामान रखा था। हम सभी बच्चे मधुमक्खी की तरह छेंक कर बैठे थें। यादो अंकल बता रहे थे कि सामने के बडे मैदान को – जो तब उबड खाबड, सरपत और कंटीली झाडियों वाला चरागाह हुआ करता था– तैयार करके बडा खेल मैदान बनाया जाएगा। यह सुनकर हम सब बच्चे बडे खुश हुए थें। यादो अंकल उस समय शायद आई आई टी कानपुर संस्थान के कर्मचारियों के संगठन की तरफ से क्रीडा मंत्री जैसे पद पर हुआ करते थे। उनकी सबसे पुरानी याद मेरे दिमाग में बतौर एक खिलाडी के रूप में ही अंकित है।

मुझे याद है, उन दिनो हमारे ब्लाक– बारह घरों वाली दो मंजिला बिल्डिगं जिसमे छह घर नीचे थे और छह घर उपर– में टी.वी. सिर्फ दो घरों में ही था। एक तो उपर मकान नम्बर 124 में निगम आन्टी के यहॉ और दूसरी मकान न. 117 में गुप्ता अंकल के घर। मोहल्ले का सलीमा हाल गुप्ता जी का घर ही हुआ करता था। निगम आन्टी के घर तो हम सब कभी कधार ही जाते थे। हम बच्चे टी.वी. के पास घुसकर सबसे आगे जमीन पर बैठ जाया करते थे, जबकि बडे लोग पीछे रखे तखत और कुर्सियों पर बैठ पोग्राम देखते थे। आमतौर पर फिल्म,चित्रहार, रामायण और महाभारत जैसे पोग्राम के दौरान ज्यादा भीड हो जाया करती थी। आई.आई.टी. के पीछे बसे गॉव के लोग भी टी.वी. देखने गुप्ता अंकल के घर चले आया करते थे। काफी लोग एक भीड के रूप में दरवाजे के बाहर से ही खडे खडे टी.वी. देखा करते थे।

बाहर खेलते हम बच्चों को जैसे ही अपने पसंदीदा कार्यक्रमों के शुरू होने की आवाज आती हम भीड को चीरते हुए सबसे आगे जाकर, बिल्कुल टी.वी. के पास बैठ जाते थे। यादो अंकल की कुर्सी ठीक दरवाजे के पास होती थी। वे वहॉ बैठे बैठे ही अपनी कमेटरी जारी रखते थें। हम बच्चों का ध्यान टी.वी. के साथ ही यादो अंकल की बातों पर भी होता था। अक्सर वो आगे घटने वाली घटना को पहले ही बोल जाया करते थें। कई बार तो बहुत गुस्सा लगती थी। हम बडे चाव से मिथुन की फिल्म देख रहे होते और यादो अंकल पीछे बैठे दिलीप कुमार, गुरूदत्त और राजेन्द्र कुमार आदि का बखान करने लगते। हम बच्चे मारधाड से भरपूर फिल्म पसन्द करते थें और वो बडों के साथ मिलकर जय संतोषी मॉ और पाकीज़ा टाइप फिल्मों की चर्चा शुरू कर देते थे। हम लोगों को बिल्कुल अच्छा नही लगता था।

एक दिन इन्ही गुप्ता अंकल के घर पर लगी टी.वी. में हम बच्चों ने घरमेंन्द्र की एक फिल्म यादों की बारात देख ली थी।फिल्म में एक गीत था.....यादों की बारात निकली है दिल के द्वारे। यह गाना हम बच्चों की जुबान पर चढ गया था। इसके बाद कई दिनों तक हम बच्चे यादो जी को आता जाता देख छिपकर यही गीत ...यादो की बारात निकली है दिल के द्वारे....गुनगुनाया करते थें। कुछ दिनो तक तो यादो अंकल समझ ही नही पाते थे कि यह गीत उनके लिए ही गाया जा रहा है, लेकिन फिर वे समझने लगे थे। एक दिन तो हम बच्चों को इसी बात को लेकर जोरदार फटकार भी पडी थी।

यादो अंकल को पौधे लगाने का बडा शौक था। अपने घर के आगे पीछे की छोटी छोटी क्यारियों में उन्होने तमाम किस्म के पौधे लगा रखे थे। नागफन्नी, हडजोड, गुलाब,गेंदा,अंगूर, अनार, डहेलिया,गेंदा, पपीता, शहतूत.... और न जाने क्या क्या। दूर दराज़ भी किसी की हडडी वडडी टूटती तो उसके घर के लोग हडजोड के डंठल मॉगने सीधे यादो अंकल के घर चले आते थे। यादो अंकल हडजोड के डंठलों के साथ ही ढेर सारी हकीमी सलाह भी मुफत दे दिया करते थे।

यूँ तो हम बच्चे पूरी दोपहरी आसपास के सभी घरों की क्यारियों में लगे फलों पर धावा बोला करते थे , परंतु यादो अंकल की क्यारी में एक साथ कई विकल्प होते थे। वहॉ से फल चुराने में कुछ ज्यादा ही मजा आता था। उनकी क्यारी में लगा पपीते का एक पेड फलों से लदा पडा था। एक बडा सा पपीता पिलछहुँ हो चला था, पर यादो अंकल शायद उसे अभी और पकने देना चाहते थे। सो वह अगले दो तीन दिन भी लटका ही दिखता रहा। हम बच्चों ने एक दोपहरी, सब से छुपकर उसे तोड लिया। छत पर ले गये। एक दोस्त के घर से चाकू लाकर उसे छील काट निपटा दिया। शाम को यादो जी खूब बडबडाए पर ये न जान सकें कि वारदात को अंजाम देने में कौन कौन शामिल था।

अगली सुबह जब मै सो कर उठा तो मुझे बुलवाया गया। दो दोस्त पहले से ही कान पकडे खडे थें वहॉ। हमारे एक दोस्त की बहन, जिसने चाकू से पपीते की फॉक काटकर हम सब का हिस्सा लगाया था, वह सरकारी गवाह बन गई थी। उसकी सजा तो माफ हो गई पर हम लोगों को काफी देर तक मुर्गा बनाया गया। मुर्गा बनकर भी संतोष था। पपीता था बडा लाजवाब। ऐसे पपीते के लिए दस बार मुर्गा बनना भी गवारा है।

एक सुबह हमने देखा कि यादो अंकल कुछ बनाने में बिजी हैं। हम सब बच्चे उन्हें घेर कर खडे हो गए। वे एक बडे से बांस के उपरी सिरे पर साईकिल का टायर बॉध रहे थे। हम बच्चों को उन्होने कुछ सेठा तोडकर लाने का काम सौंपा। कुछ ही देर में हम लोग सेठा तोड लाए। यादो अंकल ने सेठे की छडी को तोडकर टायर में इस तरह से फॅसा दी थी कि दूर से वह एक चक्र जैसा दिखने लगे। फिर इस चक्र को उन्होने हरे रंग के कपडे से लपेट डाला था। उन्होने बहुत लंबे,मोटे से बांस के उपरी हिस्से पर यह चक्र टॉग दिया और अपने मुख्यद्वार पर गाड दिया। ये जनता दल पार्टी का चुनाव निशान था, जिसे यादो जी सपोर्ट कर रहे थे। साईकिल के टायर से बना यह चक्र अगले कई दिनो तक हम सभी बच्चों के आकर्षण का केन्द्र बना रहा था।

तब के चुनाव बच्चों के लिए बडे ही रोचक हुआ करते थे। आज जैसा नही था कि भाषण और सिर्फ भाषण।तब तो भोंपू बजाती जीपें आती, सब बच्चे उनके पीछे दौड पडते। जीप में सवार लोग ढेर सारे बिल्ले,टोपी उछाल कर जाते थे। ये पंजे वाला बिल्ला, ये चक्र वाला बिल्ला .....और न जाने क्या क्या। रोज सुबह उठकर हम लोग सबसे पहले बाहर भागते और यादो अंकल के दरवाजे पर लगे बडे से चक्र को देखते।यादो अंकल को राजनीती में गहरी रूची थी। आई आई टी कानपुर – जहॉ के वे कर्माचारी थे– के संगठन चुनाव से लेकर, पार्षद,विधायक और सासंद तक के चुनावों में उनकी बहुत ही सक्रिय भागीदारी हुआ करती थी।

बहुत ही उत्सवधर्मी प्रवत्ती के व्यक्ति थे यादो अंकल। यूँ तो वे सभी त्योहार उत्साह से मनाते थे, परंतु दीपावली और जन्माष्टमी की उनकी तैयारियॉ देखते ही बनती थी। उनके पास बिजली के झालर का बरसों पुराना सैट था जिसे वे प्रत्येक दीपावली में सुबह ही निकालकर बरामदे में फैला लेते और फिर दिनभर टेस्टर हाथ में लेकर एक एक बल्ब चैक करते हुए झालर को दुरूस्त करते थे। कई बार तो उन्हे अंधेरा होने तक भी जुटे रहना पडता था। लेकिन हॉ ....एक बार जो झालर टॅग गई तो महीना ढेड महीना द्वार पर टॅगी ही रहती थी। जनमाष्टमी का तो कहना ही क्या.... सप्ताह भर पहले से ही तैयारियॉ शुरू कर देते थे। कृष्ण जी की झॉकी सजाते थे। लोग दूर दूर से यादो जी की झॉकी देखने आया करते थे। हम बच्चे स्कूल से लौटते समय अलग अलग तरह के पत्थर खोजते हुए आते थें। ये पत्थर झॉकी में पर्वत बनाने के काम आते थे।

लगातार कई साल ये काम करके हम लोग जाने गए थे कि यादों अंकल को कौन से पत्थर पसंद आते हैं। एक कत्थई रंग को हल्का पत्थर होता है...कुछ स्पंज जैसा । इस पत्थर का बना पहाड बहुत शोभा देता था। यादो अंकल रूई की परत बिछाकर नदी और झरना बना देते थे, मोरपॅखी और आम के पत्तों से पेड पौधे,जंगल आदि बनाते थे। छोटे से पालने मे किशन कन्हइया लेटे होते और हम बच्चे बारह बजने का इंतजार करते थे। यादो अंकल का कहना था कि बारह बजते ही खीरा अपने आप फट जाएगा और तब कृष्ण जी का जन्म होगा। हम लोग अपनी आखों से खाीरा फटते हुए देखना चाहते थे, पर ठीक बारह बजने के पहले यादो जी हम सब बच्चों को बाहर कर झॉकी पर परदा डाल देते और फिर दस–बीस मिनट बाद ही पंजीरी और चरनामृत बॉटने बाहर आते थें। हर साल कृष्ण जी का जन्म होते हुए न देख पाने का मलाल तो होता था पर पंजीरी और चरनामृत पाकर हम लोग सब भूल जाते थे। अगले दिन सुबह एक पुडिया पंजीरी और मिल जाया करती थी। पंजीरी बहुत खाई है पर यादो अंकल के घर जैसी पंजीरी आज तक नही मिली। आंटी बहुत जतन से सारी प्रसाद सामग्री बनाती थी।

यादो अंकल ने मोहल्ले के सभी बच्चों का नामकरण अपनी ही स्टाइल में कर रखा था। कईयों के तो बाप के नाम में ही जूनियर लगाकर बुलाया करते थे। मेरे बडे अब्बा के बच्चों के नाम जैसे गयासुददीन में आने वाले दीन को लेकर आगे कुछ भी जोडकर वो एक नया नाम बना लेते थे। किसी को कमरूददीन तो किसी को सफरूददीन बना देते थे। छोटे भाई जफर को तो अभी तक भी वो 'आदावदी' कहकर ही बुलाते थे। जैसा मैं अब समझ सका हूँ कि ये आदावदी शब्द असल में आदाब अर्ज का अपभ्रशं रूप रहा होगा।

स्कूल की परीक्षाओं का पेपर देकर लौटते ही यादो अंकल हम सब बच्चों को अपने पास बुला लेते और पूछते कि किस सवाल के लिए क्या लिखा है ? उनके ऐसा करने से हम सब बच्चे बहुत डरते थें क्योंकि तुरंत सबके मॉ–बाप को फीडबैक मिल जाता था कि कौन, कैसा पेपर करके आया है। यही हाल रिजल्ट मिलने वाले दिन भी होता था। यादो अंकल एक एक बच्चे को बुलाकर उसका रिजल्ट देखते थे। अच्छे नम्बर लाने वाले को शाबासी देते और फेल होने वाले को तसल्ली देकर आगे मेहनत करने को प्रोत्साहित करते थे।

यादो अंकल स्वभाव से संवेदनशील आदमी थे। मेरी दादी के इंतकाल के समय सब कामों में आगे रहकर उन्होने एक अच्छे पडोसी की जिम्मेदारी निभाई थी। कब्र खोदे जाने से लेकर कफन–दफन तक, सबमे साथ रहे थे। वहॉ कब्रस्तान के पास की नहर के पानी से एक खेत सींचा जा रहा था। उस बहती हुई नाली में यादो अंकल ने अपने हाथ पैर धोयें और सिर पर रूमाल रखे हम सब के पास आकर बोलें वो पानी पाक है सब लोग जाकर वुजु बना लो। जनाजे की नमाज के वक्त मैने देखा कि उन्होने भी अपने सर पर रूमाल रखकर ठीक वैसा ही अहतराम किया जैसा बाकी मुसलमान कर रहे थे। उस दिन मुझे समझ आया कि यादो अंकल सिर्फ अपने धरम के बारे में ही नही बल्कि दूसरे धरम के रिवाजों को भी खूब अच्छे से समझते हैं। उनके मन में सभी धरमों के लिए खूब सम्मान था। आज मै जब कभी किसी चर्चा में या टी.वी. की बहसों में सैक्यूलर या समाप्रदायिक सौहार्द जैसा शब्द सुनता हूॅ तो यादो अंकल का चेहरा सामने घूम जाता है। यह भी सोचता हूॅ कि मैं आज जैसा हूॅ, जिन विचारों को मानता हूॅ, उसमें यादो अंकल जैसे लोगों के सानिध्य ने भी अवश्य ही प्रभाव डाला होगा।

एक समय ऐसा भी आया था जब उत्तर प्रदेश के हिन्दु मुसलमान के दिलों में एक दूसरे के लिए खूब नफरत भर दी गई थी। कानपुर में जबरदस्त दंगों का दौर जारी था। आई.आई.टी. कानपुर जैसे संस्थान के भीतर भी कुछ संगठनों द्वारा आए दिन जुलूस निकालना और शोर –शराबा करना होता रहता था। पूरे कैंपस में चार–छह घर ही मुसलमान थे। सब डरे सहमे रहते थे। सक्सर घर पर अम्मा अब्बा में बातचीत होती थी की अगर रात बिरात कहीं छिपना पडे तो किसके घर पनाह मागना ठीक होगा। उस वक्त एक ही घर सूझता था – यादो अंकल का घर। सच में,यूॅ तो सारा मोहल्ला ही अपना था पर ऐसे वक्त में सबसे ज्यादा ऐतबार यादो अंकल के घर पर ही बन पाता था।

सबके साथ हॅसने हॅसाने वाले यादो अंकल अब समय बीतने के साथ ही काफी परेशान और बीमार से नजर आने लगे थे। डाक्टरों ने बताया था कि उनको दमा की बीमारी है, लंबा इलाज करना पडेगा। इधर घर पर होने वाली बातों से पता चला कि कई साल पहले यादो अंकल का तबादला एक विभाग से दूसरे किसी विभाग में किया जा रहा था। वे नही माने, दूसरे विभाग में जाने से इन्कार कर दिया। उधर प्रशासन भी अपनी जिद पर अडा रहा। मामला इतना बिगडा कि कोर्ट कचहरी तक जा पहुॅचा। कोर्ट कचहरी के फैसले इतनी जल्दी कहॉ सुलझते हैं। मामला बहुत लंबा खिच गया। इस दौरान यादो अंकल सस्पेंड कर दिए गये। पिछले कई बरस से उन्हें अपने मूल वेतन का कुछ ही हिस्सा मिल रहा था। इसी में वे अपने दमे का इलाज, पत्नी के ब्लड प्रेशर और तीन बेटियों की पढाई का खर्च किसी तरह से पूरा करते आ रहे थे। स्वाभिमानी इतने थे कि अपनी परेशानियों को कभी लोगों के सामने जाहिर भी नही करते। बच्चों से तो हमेशा ही उनको प्यार रहा। पुराने पडोसियों के नाती–पोते और नए पडोसियों के बच्चे तो उनकी गोद में ही खेलकर बडे हुए हैं। अपने मॉ बाप से ज्यादा यादो अंकल और यादो आंटी को ही पहचानते हैं।

समय बीतता गया। काम काज के चलते मेरा कानपुर छूट गया। साल छह महीने मे जाना आना होता तो सबसे मुलाकात हो जाया करती थी। यादो जी से भी दुआ सलाम हो जाती थी। बातचीत में पता चलता था कि उनका कोर्ट केस और भी जटिल रूप लेता जा रहा है। प्रशासन तरह तरह से उनको परेशान करने लगा था। इस सिलसिले में उन्हे हाईकोर्ट के कई चक्कर लगाने पडते थें। गॉव के खेत से मिला कुछ राशन जरूर आ जाया करता था लेकिन दूसरे खर्च पूरा करने के लिए यादो जी ने बच्चों को टयूशन पढाना शुरू कर दिया था। कोर्ट कचहरी और अपनी बीमारी से जूझते हुए भी यादो जी ने अपनी बेटियों को अपने पैरों पर खडा किया। तीनो अच्छा पढ लिख गई और घर को आर्थिक सहयोग देने लगी हैं। बडी की शादी हो चुकी है। मॅझली ने बचपन से ही अपने पिताजी को अदालतों में दौडते देखा है। इसलिए वह वकालत की पढाई पूरी कर स्थानीय कोर्ट में प्रैक्टिस कर रही है। उसे उम्मीद थी की पिताजी के केस में वह मदद कर सकेगी। छोटी वाली पास के निजी स्कूल में बतौर शिक्षिका पढाने लगी थी।

बेटियों के सहारे अब आर्थिक परेशानियॉ तो काफी हद तक कम हो गई थीं लेकिन कुछ दूसरी समस्याएँ सामने आने लगी थी। गॉव में चचेरे भाइओं ने यादों जी की खेत जमीनों पर कब्ज़ा जमा लिया था। इस सिलसिले में कुछ और केस में दौडभाग बढ गई थी। इधर उम्र के साथ साथ दमा भी अब ज्यादा परेशान करने लग गया था। सर्दियों में तो उनकी ऐसी सॉस चढ जाया करती कि लगता अब गए कि तब। बिटिया ने सांस देने की मशीन घर पर ही ला कर रख ली थी। अब रात बिरात उसी के सहारे यादो जी को कुछ राहत दे दी जाती और सुबह होने पर अस्पताल लेकर भागते थें।

अभी दो तीन साल पहले पता चला कि यादो अंकल बरसों से चल रहा अपना केस हार गये हैं। सरकार ने उनकी सेवा तत्काल समाप्त करके सरकारी मकान भी वापिस ले लिया है। अब वे पास की ही एक बस्ती में दो कमरे का छोटा सा किराये का मकान लेकर रह रहे हैं।

आज सुबह अम्मा का फोन आया। आमतौर पर अम्मा शाम को ही फोन करती हैं। सुबह का फोन देखकर ही लगा कि कुछ खास बात होगी। अम्मा ने बताया कि यादो अंकल अब इस दुनिया में नही रहे हैं, आज सुबह तडके ही उनका इंतकाल हो गया। अपने दमे की वजह से सुबह चार बजे उनकी सांसे थम गई थी। कल रात तक ठीक ठाक थे। पूरी सर्दियॉ पार कर आए थे। रात को अच्छे भले सोये थे। सुबह उनकी सॉस उखडना शुरू हुई। हमेशा की तरह घर वालों ने मशीन लगाकर कुछ राहत देने का प्रयास किया, पर बात नही बनी। सुबह तडके सब उन्हें लेकर पास के अस्पताल भागे जहॉ डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

यादों अंकल की मौत की खबर ने मन दुखी कर दिया है। बचपन की सारी यादें ताजा हो रही हैं। उनका बनाया हुआ साइकिल के टायर का चक्र , लाल बल्ब से बनी दशरथ की आत्मा, पत्थर के पहाडों से गिरती रूई की परत की नदी, उनके पेड का पपीता और पॅजीरी की पुडिया सब कुछ ऑखों के सामने तैरती जा रही हैं। सलाम यादो अंकल, आपके जज्बे को सलाम। अपने उसूलों पर कायम रहते हुए भी वक्त से कैसे लडा जाता है, ये सीखा है हमने आप से । अपने मजहब को मानते हुए भी कैसे दूसरे के मजहब का एहतराम रखा जाता है, ये भी समझा है आपसे। आप एक बहुत अच्छे इंसान थे। आज के समाज को आप जैसे ढेर सारे 'यादो अंकल' की जरूरत है। बहुत तकलीफें देखी हैं आपने उम्र भर। जाइए, चैन से सो जाइगा अब।

अपने यादो अंकल की याद में.....

मोहम्मद उमर